।। बाळ लछ को अंग ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ बाळ लछ को अंग लिखंते ||

||दोहा||

ओर बात सब जक्त मे || देखर करे ऊपाय ||
बाळ साद सुखराम के || कुण सिखावे आय ||१||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि समझ आनेपे तो जीव बाते देखकर समजता व समजकर वैसा उपाय करता परंतु बालपण मे जरुरत को देखकर समजे व समझकर वैसा उपाय करे यह तो वह नही जाणता फिर यह कौन सिखाता यह आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज का सभी नर नारी,ग्यानी,ध्यानीयोको प्रश्न है |||१||

मां मुख हांचळ देत हे || फिर कर लहे संभाय ||
खांचण कळ सुखराम के || किणी सिखाई आय ||२||

बालपण मे माता बालक का दुध से पोषण होवे इसलीये अपने दुध से भरे स्तन बालक के मुख मे देती व बच्चे को हाथो मे बराबर पकड्कर रखती । बालक स्तन मुख मे पकड्ता व खिच खिचकर दुध पिता । माता ने स्तन की बिटन्या मुखमे दी इसलिये स्तन तो मुखमे रखे गये यह उपाया तो माँ ने कर दिया परंतु स्तन से दुध खिंचना व गिटना यह कला किसने सिखाई यह दुध खिचनेकी कला माँ ने नही सिखाई यह सभी नर नारीयो सोचो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है |||२||

लिंग मुख नाडा ऊतरे || गुदा छांट मळ अहार ||
बाळ समे सुखरामजी || ओ किण दीयो बिचार ||३||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,बालपन मे लिंग से पेशाब करना व गुदासे तट्टी करना यह सब किसने सिखाया यह सभी नर नारीया सोचो |||३||

सुरत निरत मन सुध नही || ना नर कहे न कोय ||
बाळ लछ सुखरामजी || किणी सिखायो मोय ||४||

जिस दिन जन्म लिया उस दिन सुरत निरत,मन,बुध्दी,चित्त आदि किसी भी चिज की जीव को समझ नही थी व जीव को यह समझ कोई जगत का मनुष्य सिखा भी नही पा रहा था । ऐसे बाल अवस्था मे तुम्हे किसने सिखाया यह मुझे बताओ ऐसे सभी नर–नारीयोको आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज पुछ रहे है |||४||

काना सुणे न सांभळे || दिष्ट न आवे लोय ||
माय ग्रभ सुखरामजी || छाड तुरंत दे रोय ||५||

जिस दिन जन्मा उस दिन कानोसे सुण नही सकता था । ऑखोसे देख नही सकता था । फिर भी गरभ त्यागतेही तुरन्त रोने लगा यह रोकर जगतको गर्भका दु:ख बतानेका ग्यान किसने सिखाया यह सभी नर–नारीयो सोचो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है। ||५||

पीछे सब संगत भई ।। गुर सत्तगुर जग माय ।।
बाळ समे सुखरामजी ।। किणे सिखायो आय ।।६।।

जन्म लेने के बाद तरह तरह की संगती मिली तथा संसारमे अनेक गुरु सतगुरु मिले । परंतु बालपण मे स्तन से दुध खिंचना,लिंग से पेशाब करना,गुदासे तट्टी करना,जगत को रोकर गर्भ का दु:ख कहना ऐसी अनेक चिजे किसने सिखाई यह जगत के सभी नर–नारी सोचो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।६।।

ग्रभ वास नव मास लग ।। किण राख्यो बिल माय ।।
पीछे सुण सुखरामजी ।। किण कहयो तूं जाय ।।७।।

गर्भ मे नौ महिने तक खाने खेलनेके धुन मे लगाकर किसने रखा । व तेरा गर्भ के बाहर जगत मे टिकनेवाला शरीर बनतेही तु यहा से चला जा ऐसा किसने कहा यह जीव तु सोच ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे है ।।।७।।

ऊण समे संगत सो गुरू ।। फेर चले अंत लार ।।
दूजा सब सुखरामजी ।। संगत सरस बिचार ।।८।।

गर्भ से लेकर शरीर त्यागने के बाद भी अंत तक जो गुरु साथमे रहता वही गुरु गुरु है । वह कुद्रती गुरु है । वह गुरु सुख दु:ख मे साथ देनेवाला गुरु है । जनम लेने के बाद मिले हुये गुरु ,सतगुरु गर्भ से लेकर शरीर त्यागनेके बाद भी अंततक साथ देनेवाले नही रहते इसलिये इन गुरु सतगुरु की संगत हलकी है उत्तम नही है ।।।८।।

से गुर सब ही चीन ज्यो ।। ग्रभ वास मे संग ।।
नख चख कर सुखरामजी ।। प्राण चडाया रंग ।।९।।

गर्भवास की समय मे जो साथ मे था उसी गुरु को सभी जन पहचानो । उस गुरु ने तेरा नख से चख तक ध्यान देकर मनुष्य शरीर बनाया व उस शरीर मे सांस डालकर तुझे जगतमे भेजा उस गुरु को खोज ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।९।।

प्राण पुरस कूं राखियो ।। गर्भ वास मे मान ।।
सो सत्तगुर सुखरामजी ।। सुध बिन दीयो ग्यान ।।१०।।

गर्भवास मे तेरे प्राण पुरुष को मेहमान जैसे रखा । तुझे खाने पिने के साथ जापता रखते सभी सुविधाये पहुँचायी । तुझे गर्भ मे सुध नही थी समज नही थी ऐसे बिकट धाममे समय समय पे खाने पिनेका व स्वयम का जापता करने का ग्यान दिया वह अस्सल व कुद्रती सतगुरु है उस सतगुरु को खोजो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे है ।।।१०।।

सिष झेले गुर केहेत हे ।। अेतो भया अनेक ।।
सत्तगुर सो सुखराम के ।। आद अंत संग पेख ।।११।।

गुरु ग्यान कहता और शिष्य ग्यान सुणता ऐसे गुरु,सतगुरु जन्म लेनेके बाद अनेक हो गये

व होते रहेंगे परंतु जीव के साथ आदिसे पारब्रम्ह से लेकर अंतमे पारब्रम्ह छोड्कर सतस्वरुप मे जावे जब तक कुद्रती रहता वह सच्या सतगुरु है यह जीव तु समज ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।११।।

ना बिछडया ना बिछडे ।। सदा संग गुरदेव ।।
ऊण गुर की सुखराम के ।। करो नित प्रत सेव ।।१२।।

जैसे जन्म लेनेके बाद बनाये हुये गुरु,सतगुरु समय पे बिछ्ड्ते रहते वैसे जो गुरु जीव से कभी बिछ्डा नही व नही बिछ्ड्ता व हर सुख दु:ख मे सदा संग रहता उस गुरुदेव की पहचान करो व उसकी नित्य प्रति भक्ती करे ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे है ।।।१२।।

ग्रभ वास मे राखिया ।। बाळ पणे सुण लोय ।।
सो गुर कूं सुखराम के ।। भूल्यां भलो न होय ।।१३।।

यह मनुष्य तन गर्भवास मे नौ महीने रह कर मिला है । ऐसे नौ माह मे जीस गुरु ने बाल देह का रक्षण किया है ऐसे गुरु को भुले जाकर अन्य गुरु सतगुरु धारण करने से भला नही होगा देह छुटने पे बड्ा दु:ख पड्ेगा ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।१३।।

जुग जुग संग साथे रमे ।। सो गुर मोय बताय ।।
सुण ग्यानी सुखराम के ।। ओर गुर जग माय ।।१४।।

जगतके ग्यानीयोको आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज पुछ्ते है कि जो हंस के साथ युगो युगोसे रम रहा है वह गुरु मुझे बतावो । संसार के गुरु,सतगुरु शरीर छुटनेके बाद हंस के साथ नही चलेंगे । माता,पिता,पुत्र,पुत्री,धन संपदा शरीर आदि के समान यही संसारमे रह जायेंगे मै अकेला सुख दु:ख के धक्के खाउँगा । काल के दु:ख मे अकेला होनेपे संग रहता वह सतगुरु बतावो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ग्यानीयोको कह रहे है ।।।१४।।

जीव पलट अब मन भयो ।। गुरू कीया जग माय ।।
बाळ दछा मे ग्यान दे ।। सो मुज गुरू बताय ।।१५।।

गर्भ मे बाल दशा मे जीव ब्रम्ह स्वरुप का था परंतु जवानी आते ही वही जीव विषय विकारी मन माया के स्वरुप का बन गया । इसलिये जीव ने स्वर्गादिक के विषय विकारोके पुर्तता के गुरु,सतगुरु धारण कर लीये व कर रहा । इन गुरु को धारने से भला नही होता इसलिये ग्यानीयो बालदशामे के मन विकारोसे छुटने का ग्यान देता वह गुरु मुझे बतावो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।१५।।

अर्ध ऊर्ध के बीच मे ।। बसे सिखावण हार ।।
सो सत्त गुर सुख राम के ।। निरख उनमनी धार ।।१६।।

जो गुरु घटमे बसकर आते जाते सांस मे याने हर पल मे आवागमन के सच्चा गुरु है । वही कुद्रती सतगुरु है । ऐसा कुद्रती सतस्वरुपी गुरु जीस घटमे प्रगट हुआ उस घट खोजो व उस सतगुरु से अपने घटमे का कुद्रती सतगुरु प्रगट करा लो व अन्य मन ने माने हुये अभितक के होणकाल के सभी गुरु,सतगुरु को त्यागो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे है । ।।१६।।

।। इति बाळ लछ को अंग संपूरण ।।